VOLUME-7, ISSUE-4, APRIL-2018 • PRINT ISSN No 2277 - 8160

Original Research Paper

History

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की आजाद हिन्द फौज की स्वतंत्रता में भूमिका

प्रीति

शोधार्थी, आई. जी. यू. मीरपुर, रेवाड़ी, इतिहास विभाग

KEYWORDS :

नेताजी :–देश लम्बे समय तक गुलामी की जंजीरों में जकड़ा रहा। देश को गुलामी से छुडवाने व स्वतंत्र करवाने के लिए समय–समय पर अलग–अलग नेताओं द्वारा अलग–अलग गतिविधियों के द्वारा प्रयास किए गए। इन्हीं नेताओं में एक स्वतंत्रता संग्रामी थे श्री नेताजी सुभाष चन्द्र बोस। भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के योगदान की जब गणना की जाती है तो उनका स्थान बहुत ही पर व उग्रवादी नेताओं के रूप में लिया जाता है। वे देष को आजाद करवाने के लिए हर तरह के प्रयासों को उचित समझते थे। वे गांधीजी को मानते थे लेकिन उनका यह विश्वास बिल्कुल नहीं था कि केवल अहिंसा के बल पर ही आजादी प्राप्त हो सकती है। सुभाष चन्द्र बोस के राजनैतिक गुरू गांधी के समय के नेता बंगाल से चितरंजनदास थे। नेताजी बहुत ही तेजस्वी वक्ता थे। उनके मन में बचपन से ही देष प्रेम की भावना कूट–कूटकर भरी हुई थी। सुभाष चन्द्र बोस जी ने देष के लिए संघर्ष करने के लिए राजनैतिक रूप से शुरू आत कांग्रेस से की थी। उन्होंने सबसे पहले ''असहयोग आन्दोलन'' में भाग लिया था। यह उस समय बंगाल में चितरंजनदास के नेतृत्व में चलाया जा रहा था। अंग्रेजी सरकार ने सुभाष चन्द्र बोस की गतिविधियों पर नजर रखनी शुरू कर दी थी। इसलिए अंग्रेजी सरकार ने डरकर 1924 में कान्तिकारी ष्षडयंत्र का आरोप लगाकर बन्दी बना लिया। लम्बे समय से जेल में रहने के कारण उनका स्वास्थ्य खराब हो गया। सन् 1927 में उन्हें रिहा किया गया।[1]जेल से निकलने के बाद सुभाष चन्द्रजी ने देष की स्थिति का अवलोकन किया। सुभाष चन्द्र बोस जी नेकहा था कि ''मैं जन्म से ही आषावादी पैदा हुआ हूँ तथा किसी भी परिस्थिति में पराजय को स्वीकार नहीं करूंगा। मैं तुमसे भी अपने अन्दर एक ऐसी आषावादिता उत्पन्न करने की अपील करता हूं ताकि भारत में व्याप्त अंधकार, सुबह के रूप में अधिक समय नहीं लगेगा।[2]अपने संघर्ष के आरम्भिक वर्षों में सुभाष चन्द्र बोस मानते थे कि भारतीय स्वाधीनता संघर्ष में कृषकों, युवाओं तथा महिलाओं को भी स्वतंत्रता के लिए प्रयास करना चाहिए। अभी इन सभी वर्गों को प्रोत्साहित करने का समय आ गया है। 1928 मई में महाराष्ट्र में हुए कांग्रेस के प्रान्तीय सभा के अधिवेषन में अपने भाषण में कहा कि ''कांग्रेस को प्रत्यक्ष रूप से श्रमिकों, युवाओं तथा महिलाओं का एक अलग से विभाग खोलना चाहिए'' सुभाष जी स्वतंत्रता के संघर्ष को इतना विस्तृत बनाना चाहते थे कि अंग्रेजी सकरार बहुत दबाव महसूस करे।[3]लेकिन कांग्रेस की गतिविधियों के कारण हमेषा उनके महात्मा गांधी जी से विचार मतभेद रहते थे। गांधीजी से विचार मतभेद ही के कारण सुभाष जी ने कांग्रेस से त्याग पत्र दे दिया था। इसके पष्चात् वे लगातार देष के लिए कार्य करते रहे। उन्होंने फारवर्ड ब्लॉक नामक दल की स्थापना की। वे उच्च व्यक्तित्व के धनी थे। उनके विचारों से प्रभावित होकर उन्हें देशबन्धु द्वारा व कार्यकर्ता के निवेदन पर नगर निगम अध्यक्ष व फारवर्ड पत्रिका का सम्पादक पद पर नियुक्त किया गया।[4]सुभाष जी 1933 से 1936 तक यूरोप में रहे। वहां के प्रमुख व्यक्तियों मुसोलनी, रोमेन रौला व यूरोप के अन्य महान व्यक्तियों से मिले। उनका मकसद केवल और केवल देष की आजादी था।जब सुभाष जी वापिस भारत आए तो उन्होंने विदेषों में हुए अपने देष को आजाद करवाने के प्रयासों के बारे में बताया तो गांधीजी के विरोध के बाद भी उनको 1939 में दोबारा से कांग्रेस अध्यक्ष बना दिया गया। उस समय सितम्बर 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध आरम्भ हो चुका था। सुभाष जी इस समय को भारत की आजादी के लिए ब्रिटेन की साम्राज्यवादी शक्ति पर चोंट करने के लिए बहुत ही अच्छा समय मानते थे। इस समय भारतीयों द्वारा किसी भी प्रकार की अंग्रेजों की सहायता न करे। उससे अस्थाई राष्ट्रीय सरकार के द्वारा सत्ता को भारतीयों के हाथों सौंपने की मांग करनी चाहिए। लेकिन महात्मा गांधी जी ने इस पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा ब्रिटेन के विनाष पर हमें स्वतंत्रता नहीं चाहिए। सुभाष जी के युद्ध में ब्रिटेन का साथ न देने की अपील पर अंग्रेजी सरकार ने उन्हें पकडकर जेल में डाल दिया।[5] किसी तरह से जब जेल से निकलकर बोस जी जर्मनी पहुंचे। वहां पहुंचकर वे जर्मन सरकार के प्रभावषाली नेताओं से मिले व उन्हें अंग्रेजों के विरूद्ध भारत में सहयोग करने की योजना समझाने लगे। सुभाष चन्द्र बोस का मुख्य उद्देष्य यह था कि जर्मन सरकार उन्हें बर्लिन में आजाद हिन्द फौज की अस्थाई सरकार स्थापित करने व उसकी अन्य गतिविधियाँ भी जर्मनी के मित्र देषों में करने की अनुमति का सहमति पत्र दे। सुभाष जी ने अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व के बल पर जर्मन सरकार से अपनी गतिविधियॉं संचालित करने की अनुमति प्राप्त कर ली। उन्होंने वहॉं पर भारतीय सेना का गठन करने की अनुमति के साथ भाषणों व अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रंता का अधिकार प्राप्त कर लिया। सुभाष जी जर्मनी में बहुत लोकप्रिय हो चुके थे। यहॉं पे लोग इन्हे नेता जी के नाम से जानते थे।[6]नेता जी ने अपने देष के लिए विदेषों में जो प्रयास किये। उन्होंने जर्मनी व जापान से जब सहायता मॉंगी उस समय भी विष्व पटल पर भारत के स्वाभिमान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ने दिया। उन्होंने अस्थाई सरकार तथा आजाद हिन्द फौज को स्वाधीनता के बाद देष के पुनः निर्माण को दोबारा से बहुत ही उत्साह से कार्य करने का विष्वास दिलाया था। किस तरह से एक व्यक्ति विदेषो मे जाकर विपरित परिस्थितियो से लड़कर ''आजाद हिन्द फौज'' की अस्थाई सरकार व आई.एन.ए का गठन करके सुभाष चन्द्र बोस ने विश्व के इतिहास में हमेषा–हमेषा के लिए अपना नाम लिख दिया। अपनी मातृभूमि को आजाद करवाने के लिए विदेषी भूमि पर किसी संगठन को चलाना व लाखों प्रवासी भारतीयों को एक इकाई में संगठित कर यह सब नेता जी के व्यक्तित्व का ही प्रभाव था।[7]

आजाद हिन्द फौज

सन् 1941 ई0 में ''आजाद हिन्द फौज'' के कई स्थानों पर षिविर बनाये गए। सन् 1942 ई0 में आजाद हिन्द फौज अस्तित्व में तब आई जिस समय द्वितीय विश्व युद्ध चल रहा था। उस समय प्रवासी भारतीयों की स्थिति बहुत अधिक खराब हो गई।वहॉं पर भारतीयों ने अपने अलग–अलग संगठन बना लिये थे। उनका अब प्रथम उद्देष्य भारत को स्वतन्त्र करवाना बन गया था। दूसरा इन संगठनो का उद्देष्य प्रवासी भारतीयों की रक्षा करना। जो लम्बे समय तक अपने उद्देष्यों की पूर्ति के लिए अलग–अलग स्थानों पर कार्य भी करता रहा।[8]लम्बे समय तक ये गतिविधियॉं गुप्त रूप से होती रहती थी। लेकिन 8 दिसम्बर 1941ई0 को जापान ने अंग्रेजी सेना को हरा दिया उस समय ब्रिटेन की ओर से जो सेना लड़ रही थी। उसमें बहुत से भारतीय भी थे। इस समय जापान मे इण्डियन इंडियेंडेस लीग का प्रभाव बन चुका था। इस लीग के प्रभाव के कारण ही भारतीय युद्धबन्दियों के साथ अच्छा व्यवहार व उनको सम्मान की नजर से देखा जाने लगा। उस समय इन्ही भारतीयों में बन्दी कैप्टन मोहन सिंह भी थे। दिसम्बर 1941 में उन्होंने ही जापान सेना के सामने आत्मसमर्पण कर दिया था।उनके समर्पण के कुछ समय पश्चात् 15 दिसम्बर 1941ई0 को बैंकाक से ज्ञानी प्रीतम सिंह उनसे मिलने आये। जो की आजद हिन्द फौज को संगठित करने के लिए भारतीय सैनिकों को इक्टठा कर रहे थे। मोहन सिंह व प्रीतम सिंह की मुलाकात के बाद इनकी अगली मिटिंग जापान के मेंजर फ्यूजीहारा से हुई। वे चहाते थे कि भारतीय सेना अंग्रेजो से आजाद होने के लिए अपना रक्त बहाये न कि अंग्रेजी साम्राज्यवाद के बढ़ावे के लिए।[9]सभी युद्ध बन्दियो को जापान सरकार की सहमति से कैप्टन मोहन सिंह को सौंप दिया। कैप्टन मोहन सिंह ने उन्हे इन शब्दों से प्रोत्साहित किया, ''अब पूर्व में अंग्रेजी अत्याचार के दिन समाप्त हो रहे है और उनके घृणित शासन का अब अंत होना ही चाहिये। अब भारतवर्ष स्वतन्त्रता प्राप्ति के कगार पर खड़ा हैं अब हमारी जिम्मेदारी है कि हम स्वयं को संगठित करें। मैं तुम सबसे इस सेना में सम्मिलित होने का निवेदन करता हूँ।कैप्टन मोहन सिंह के नेतृत्व मे आजाद हिन्द फौज में भर्ती का काम बहुत तेजी से आरम्भ हो गया। सिंगापुर में आजाद हिन्द फौज के कार्यालय की स्थापना कर 9 मार्च 1942 को श्री राघवन की अध्यक्षता में सिंगापुर में एक सम्मेलन का आयोजन किया गया। सिंगापुर सम्मेलन के नेतृत्व के लिए जर्मनी से सुभाष चन्द्र बोस को बुलाया गया।[10] अगला सम्मेलन 15 जून 1942 को श्री रासबिहारी बोस की अध्यक्षता मे बैंकाक में चला। इस 8 दिवसीय सम्मेलन मे मलाया, सिंगापुर, बर्मा, जावा, बोर्नियो, मनीला, थाईलैण्ड, हांगकांग, शंघाई, मंचूरिया आदि से प्रतिनिधि शामिल हुए। इसी सम्मेलन में एक कार्यकारिणी का गठन किया गया। जिसके अध्यक्ष रासबिहारी बोस सदस्य श्री राधवन कैप्टन मोहन सिंह, के0पी0के0 मेनन तथा कर्नल गिलानी थे। इस सम्मेलन में कार्यकारणी को इतनी शक्ति प्रदान की गई कि यह स्वतन्त्रता लीग

एवं आजाद हिन्द फौज पर नियंत्रण रखने का पूर्ण अधिकार रखती थी।[11]आजाद हिन्द फौज के महान् सैनिको ने युद्वो मे साहस व बलिदन का परिचय देकर भारतवासियो का मनोबल बढ़ाया। इन भारतीया सैनिको ने इम्फाल, कोहिमा, मणिपुर आदि स्थानो पर संघर्ष करके सफलता प्राप्त करने का इतिहास रचा। 17 अगस्त 1945 को नेताजी ने अपना अन्तिम विदाई षाषण देते हुए सैनिको को सम्बोधित किया तथा कहा कि विश्व की कोई भी शक्ति भारत को अब और अधिक समय तक गुलाम बनाकर नही रख सकती। आजाद हिन्द फौज जिन परिस्थितियो मे स्थापित हुई। उसकी अपने आप में एक बहुत बड़ी उपलब्धी थी। भारत मे उस समय गॉधावादी युग था। यहॉ पर गॉधी जी के महान व्यक्तित्व, उनके संघर्ष, अहिंसा तथा असहयोग का प्रचार चर्म पर था। ऐसे समय पर आजाद हिन्द फौज की सफलता, आकमकता व बलिदान ने जन–जन को आश्र्चयजनक कर दिया था। ''आजाद हिन्द संगठन ने अपनी अस्थाई सरकार अर्ज–ए–हुकुमत–ए–हिन्द का निर्माण किया व 9 देषो से सहयोग राषि भी प्राप्त की। आजाद हिन्द फौज न केवल आजादी प्राप्त करने के लिए लड़ रही थी। बल्कि युद्ध बन्दियो के जीवन व रक्षा उद्धेश्य के लिए भी।आजाद हिन्द फौज के योगदान के कारण स्वतन्त्रता आन्दोलन में जन–जन में क्रान्ति की भावना उठने लगी। इसी समय आजाद हिन्द फौज के कार्यों से प्रभावित होकर फरवरी 1946ई0 में नौसेनिको ने विद्रोह कर दिया। वास्तव में बिट्रिष सत्ता को आजाद हिन्द फौज ने हिलाकर रख दिया था। आजाद हिन्द फौज के बारे में गॉधी जी ने प्रभावित होकर अपने विचार व्यक्त किए थे यदि आजाद हिन्द फौज अपना तात्कालिक लक्ष्य प्राप्त नही कर पाई तो भी उसने बहुत–सी ऐसी बाते की है जिनके लिये उस पर हमेषा गर्व रहेगा।[12]

सन्दर्भ

1. अय्यर, एस.ए., बायोग्राफिकल इन्ट्रोडैक्षन, सिलेक्टैड़ स्पीचेज आफ सुभाष चन्द्र बोस, मिनिस्ट्री ऑफ इनफोर्मेषन, पब्लिकेषन डिवीजन, नई दिल्ली, 1965 पृ0 241
2. अय्यर, एस.ए., पूर्वोक्त, पृ0 226–27
3. गोपाल, मदन, पूर्वोक्त, पृ0 175–209
4. बोस, षिषिर कुमार (संपादक) कासरोडस, बिइंग दी वर्क्स ऑफ सुभाष चन्द्र बोस – 1938–40, नेताजी रिसर्च ब्यूरो, कलकत्ता, 1981 पृ0 108–11
5. बख्शी, एस.आर., सुभाष चन्द्र बोस, पृ0 139–168
6. मैकप, एस.सी., पूर्वोक्त, पृ0 124–36
7. अय्यर, एस.ए., पूर्वोक्त, पृ0 226–27
8. श्रीकृष्ण सरल, नेता जी सुभाष दर्षन, पृ0 171
9. श्रीकृष्ण सरल, कालजयी सुभाष दर्षन, पृ0 446
10. एस0ए0 अय्यर, आजाद हिन्द फौज की कहानी, पृ0 27
11. एस0ए0 अय्यर, आजाद हिन्द फौज की कहानी, पृ0 11
12. कर्नल निरंजन सिंह गिल, स्टोरी ऑफ आई0एन0ए0 पृ0 72